पेज ६
सरदार पटेल होते तो यह होता

पेज ७
असली जीत शेषन की हुई है

पेज १०
'ताक धिना-धिन' में 'फरार', 'प्रेमयुद्ध'

पेज १२
सड़कों पर भटकते स्काइजोफ्रेनिक

# संझा जनसत्ता

पृष्ठ १६ | बंबई, मंगलवार २१ दिसंबर १९९३ | मूल्य १.५०


# सड़कों पर भटकते स्काइजोफ्रेनिक

विनोद गोयल एक दिन अचानक घर से गायब हो गया। विनोद के मां-बाप ने जगह-जगह उसे छान मारा, नाते-रिश्तेदारों के घरों में चक्कर काटे, दरगाह-पीर, ओझा सबके पास गए। पुलिस स्टेशन में भी रपट दर्ज कराई। परंतु विनोद का कहीं पता नहीं चला।

दरअसल, विनोद अपना मानसिक संतुलन खो चुका था। वह एक दिन घर से निकल कर भटकते-भटकते बंबई आ गया। बंबई शहर में बोरिवली के आसपास सड़कों पर वह दिन भर भटकता रहता था। वह नाले का गंदा पानी पीता व कचरों से कुछ भी उठाकर खाता था। वह किसी से भी बातचीत नहीं करता था। वह सिर्फ खुद से बातें किया करता था। कभी-कभी खुद से रोता और कभी हंसता रहता।

एक दिन एक डाक्टर दंपति आए और उसे अपने सहयोगियों के सहयोग से उसे अपने अस्पताल ले गए। वहां उसका दो माह तक लगातार इलाज किया गया। इलाज से उसका मानसिक संतुलन सुधरने लगा। ठीक हो जाने पर उसने अपने बारे में जो कुछ बताया वह बड़ा चौंकाने योग्य था।

**उसने बताया की वह एक मध्यम परिवार से है और राजस्थान के भरतपुर शहर का रहने वाला है। वह भरतपुर के कालेज से विज्ञान की पढ़ाई भी कर रहा था।**

डा. भरत वाटवानी व स्मिता वाटवानी यह डाक्टर दंपति पिछले दो वर्ष से अपने बोरिवली स्थित शारदा रिहैबीलिटेशन फाउंडेशन अस्पताल में मानसिक रूप से असंतुलित, सड़कों पर भटक रहे लावारिस युवक-युवतियों का अपने अस्पताल में इलाज कर रहे हैं। यह सड़कों पर भटकते भिखारी सी अवस्था में दिखने वाले युवक, युवतियों, बच्चे दरअसल स्काइजोफ्रेनिया (खंडित मनस्कता) बीमारी के शिकार होते हैं। डाक्टर दंपति इन्हें सड़कों से उठाकर अपने अस्पताल लाते हैं। अस्पताल में उनको नहलाया जाता है। उनके बाल काटे जाते हैं और उन्हें नई टी शर्ट दी जाती है (ताकि वे अगर अस्पताल से भाग जाएं तो उन्हें टी शर्ट की पहचान के माध्यम से आसानी से खोजा जा सके) इसके बाद उनका इलाज शुरू होता है। दो या तीन माह तक वे बहुत हद तक ठीक हो जाते हैं और उनकी याददास्त वापस लौट आती है। वैसे पूरी तरह स्वस्थ होने के लिए उनका दो से तीन वर्ष तक इलाज करना पड़ता है। याददास्त वापस आने के पश्चात उनसे उनका घर का पता पूछा जाता है। पता प्राप्त हो जाने के बाद अभिभावकों को पत्र लिख दिया जाता है। पत्र पाते ही अभिभावक डाक्टरें से संपर्क करते हैं और डाक्टर दंपति को दुआ देकर अपने बच्चे को ले जाते हैं।

डा. भरत व स्मिता मानस रोग चिकित्सक हैं। उन्होंने बोरिवली में अपना अस्पताल खोला। अस्पताल कुछ ही वर्ष में चल निकला परंतु दोनों को इससे संतुष्टि नहीं मिली। वे कुछ अनोखा करना चाहते थे। उन्होंने पाया की शहर की सड़कों पर गंदे कपड़े पहने, बिखरे बाल

**स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के संदर्भ में डाक्टरों का कहना है कि स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के शिकार होने के कई कारण हो सकते हैं- मानसिक संतुलन बिगड़ जाना, पर्यावरण तनाव, परिवार में दो या तीन सदस्यों की लगातार आकस्मिक मृत्यु, व्यापक धन हानि, परीक्षा में निष्फल, विवाह, तलाक, बेरोजगारी इन तमाम कारणों की वजह से मरीज वास्तविकता से संबंध तोड़ देता है।**

क़िए, गटर व कचरों के ढेर से कुछ भी उठाकर खाने वाले, अजीबो-गरीब हरकत करने वाले ये गरीब इंसान दरअसल मामूली बीमारी का शिकार हैं जिन्हें आसानी से ठीक किया जा सकता है। उन्होंने कुछ ही दिनों में इन मरीजों को सड़कों से उठाकर अस्पताल में लाकर उनका इलाज करना शुरू कर दिया।

स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के संदर्भ में डाक्टरों का कहना है कि स्काइजोफ्रेनिया बीमारी के शिकार होने के कई कारण हो सकते हैं- मानसिक संतुलन बिगड़ जाना, पर्यावरण तनाव, परिवार में दो या तीन सदस्यों की लगातार आकस्मिक मृत्यु, व्यापक धन हानि, परीक्षा में निष्फल, विवाह, तलाक, बेरोजगारी इन तमाम कारणों की वजह से मरीज वास्तविकता से संबंध तोड़ देता है। परिणाम स्वरूप व अजीब हरकतें करने लगता है। घर छोड़कर सड़कों पर भटकने लगता है। सड़कों पर भटकते-भटकते गंदी चीजें खाने से व साफ न रहने से इन मरीजों को कई अन्य बीमारियां हो जाती हैं। कई तो सड़कों, फूटपाथ में ही इन बीमारी की वजह से मर जाते हैं।

डा. स्मिता का कहना है कि अन्य मानसिक बीमारियों की तरह ही स्काइजोफ्रेनिया का भी इलाज किया जा सकता है। अगर मर्ज का पता शुरू में ही चल जाए तो मरीज को ठीक करना आसान हो जाता है। स्मिता ने बड़े ही गर्व से बताया कि उन्होंने पिछले दो वर्ष में तकरीबन ७० स्काइजोफ्रेनिया मरीजों को ठीक किया है।

यह पूछने पर कि वे किस बहाने उन्हें अपनी कार में बैठा कर अपने अस्पताल ले जाते हैं। यहां इन्हें नलहा कर, साफ़ कपड़े पहना कर इनके स्वास्थ्य को संपूर्ण जांच की जाती है। अगर वे स्काइजोफ्रेनिया के अलावा अगर किसी अन्य बीमारी के शिकार हैं जैसे टीबी, बुखार, त्वचा रोग इत्यादि तो पहले इन बीमारियों का इलाज किया जाता है। जरूरत पड़ने पर हम इन बीमारियों को ठीक करने के लिए स्पेशलिस्ट डाक्टरों की भी राय लेते हैं। इन बीमारी के ठीक हो जाने के बाद हम स्काइजोफ्रेनिया का इलाज करते हैं।

दोनों डाक्टरों का कहन है कि भारत में यह बीमारी एक प्रतिशत तक है। अंधविश्वास, दंत कथाएं, धन का अभाव यही सब कारणों की वजह से परिवार जन मरीज का ठीक से इलाज नहीं कराते और मर्ज दिन-ब-दिन बढ़ता ही जाता है। उदाहरण के तौर पर हम एक केस पर गौर करें। दिलीप नामक एक व्यक्ति सड़कों पर भटक रहा था। डा. वाटवानी उसे उठाकर अपने अस्पताल ले आए। कई हफ्तों बाद इलाज के बाद पता चला की दिलीप का परिवार नागालैंड में रहता है। यहां दिलीप कालेज की पढ़ाई कर रहा था।

डा. भरत का कहना है कि आम लोग यह समझते हैं कि सड़कों पर भिखारी से दिखने वाले ये पागल किस्म के लोग समाज के किसी भी अंग के भाग नहीं होते हैं। परंतु यह सोच एकदम गलत है। इन सड़कों में भटकने वालों में गरीब व मध्य दोनों वर्ग के युवक व युवतियां होते हैं। इन्हें अगर स्वस्थ कर दिया जाए तो ये वापस सामान्य होकर समाज में अपना योगदान दे सकते हैं। बंबई जेजे कालेज आफ आर्ट्स के लेक्चर हेमंत ठाकुर भी स्काइजोफ्रेनिया का शिकार हो गए थे। वे जहांगिर आर्ट गैलरी के आसपास भटकते रहते थे। उनकी एक विद्यार्थी ने उन्हें शारदा रिहैबीलिटेशन में भरती किया। आज वे स्वस्थ होकर फिर से जेजे कालेज के लेक्चरर की नौकरी कर रहे हैं।

यह पूछने पर कि अगर मरीज की याददाश्त वापस न आए तो आप क्या करते हैं। डा. भरत का कहना है कि, 'यह कभी नहीं होता कि मरीज को याददाश्त वापस ना आए।' हां, समय जरूर ज्यादा लग सकता है पर याददाश्त वापस अवश्य आती है। कभी-कभी किसी वस्तु को देखकर या घटना के पूर्ण-स्मरण से याददाश्त वापस आ जाती है। याददाश्त के वापस आने के बावजूद सिर्फ समस्या यह होता है कि कईयों को अस्वस्थ दौर में क्या घटा व उन्होंने क्या-क्या किया यह उन्हें याद नहीं होता। कभी-कभी इसकी वजह से काफी हानि उठानी पड़ती है। उदाहरण के तौर पर २४ वर्षीय सरोज बोरिवली में भटक रही थी उसे जब अस्पताल में लाकर ठीक किया गया तो उसे याद आया की उसकी शादी हो चुकी है और वह चार बच्चों की मां है। वह आसनसोल में अपने मां के साथ रहती थी क्योंकि उसका पति उस पर बहुत अत्याचार करता था। एक दिन वह अपने मां के घर से अपने सबसे छोटे बच्चे को लेकर निकल पड़ी। उसे सिर्फ इतना याद है कि उसने बरोदा स्टेशन पर अपने बच्चे को किसी को दिया था। पर वह उस व्यक्ति के बारे में कुछ भी बता नहीं पाई।

डा. भरत व स्मिता चाहते हैं कि इस नेक कार्य में अन्य लोग भी हाथ बटाएं। उन्होंने लोगों को जागृत करने के लिए इन लोगों के बारे में वीडियो फिल्म भी तैयार की है। वे चाहते हैं कि इस नेक कार्य की और भी बढ़ोतरी की जाए। वे चाहते हैं इन मरीजों के लिए अस्पताल बनाने के लिए सरकार सस्ते दाम में जगह प्राप्त करके दे। उन्होंने कई हमदर्द लोगों से चंदा इकट्ठा करना भी शुरू किया है।

**सुनील सहगल**

भरत वाटवानी व स्मिता वाटवानी मरीज के साथ पूजो साऊ अस्वस्थ अवस्था में